प्राचीन वैदिक सैद्धान्तिक ज्ञान

ज्ञानेश्वरार्यः

दर्शनाचार्य *M.Com.*

प्रकाशक

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, जि. साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

दूरभाष : (०२७७४) २७७२१७, (०२७७०) २५७२२४, २८७४१७

E-mail : darshanyog@gmail.com Website : www.darshanyog.org

।। ओ३म् ।।

प्राचीन वैदिक सैद्धान्तिक ज्ञान

प्रश्न १ हमारे देश का प्राचीन और प्रथम नाम क्या था ?

उत्तर हमारे देश का प्राचीन और प्रथम नाम आर्यावर्त था।

प्र. २. हम भारतवासियों का प्राचीन नाम क्या था ?

उ. हम भारतवासियों का प्राचीन नाम आर्य था ।

प्र. ३. हम भारतियों का प्राचीनतम धर्म कौन सा है ?

उ. हम भारतियों का प्राचीनतम धर्म वैदिक धर्म है ।

प्र. ४. हम वैदिक धर्मियों की धार्मिक पुस्तक कौन सी है ?

उ. हम वैदिक धर्मियों की धार्मिक पुस्तक वेद है ।

प्र. ५. वेद कितने हैं ?

उ. चार - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

प्र. ६. वेद कितने पुराने हैं ?

उ. वेद १,९६,०८,५३,१०८ वर्ष पुराने हैं ?

प्र. ७. चारों वेदों में कितने मन्त्र हैं ?

उ. चारों वेदों में २०३४६ मन्त्र हैं । ऋग्वेद में १०५२२, यजुर्वेद में १९७५, सामवेद में १८७५, अथर्ववेद में ५९७७ मन्त्र हैं ।

प्र. ८. वेद की भाषा कौन सी है ?

उ. वेद की भाषा वैदिक संस्कृत है ।

प्र. ९. वेदों में क्या विषय है ?

उ. वेदों में मनुष्यों के लिए आवश्यक समस्त ज्ञान-विज्ञान है । संक्षेप में ईश्वर, जीव, प्रकृति का विज्ञान अथवा ज्ञान-कर्म-उपासना का विषय है ।

प्र. १०. वेदों का ज्ञान मनुष्यों को कैसे मिला ?

उ. सृष्टि के आदि में ईश्वर ने चार ऋषियों को प्रदान किया। जिनका नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा था।

प्र.११. अनादि वस्तुएँ कितनी हैं ?

उ. अनादि वस्तुएँ तीन हैं - ईश्वर, जीव और प्रकृति।

प्र. १२. वेद पुस्तक रूप में कब बने?

उ. वेद राजा इक्ष्वाकु के काल में पुस्तक रूप में बने।

प्र. १३. अनादि किसे कहते हैं ?

उ. जिस वस्तु की उत्पत्ति के कारण न हो उसे अनादि कहते हैं।

प्र. १४. ईश्वर के मुख्य कर्म कौन-कौन से हैं ?

उ. ईश्वर के मुख्य कर्म ५ हैं-१. संसार को बनाना, २. संसार का पालन करना, ३. संसार का विनाश करना, ४. वेदों का ज्ञान देना और ५. अच्छे-बुरे कर्मों का फल देना।

प्र. १५. ईश्वर का मनुष्यों के साथ क्या सम्बन्ध है ?

उ. ईश्वर का मनुष्यों के साथ पिता-पुत्र, माता-पुत्र, गुरु-शिष्य, राजा-प्रजा, साध्य-साधक, उपास्य-उपासक, व्याप्य-व्यापक आदि अनेक सम्बन्ध हैं।

प्र. १६. वेद में ईश्वर का क्या स्वरूप बतलाया गया है ?

उ. वेदों में ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, निराकार, न्यायकारी, कर्मफलदाता आदि गुणों वाला बताया गया है।

प्र. १७. यह संसार कब बना ?

उ. संसार १,९६,०८,५३,१०८ वर्ष पूर्व बना।

प्र. १८. यह संसार कितने वर्ष तक और चलता रहेगा ?

उ. यह संसार २,३५,९१,४६,८९२ वर्ष तक ओर चलेगा।

प्र. १९. रामायण का काल कितना पुराना है ?

उ. रामायण का काल लगभग १० लाख वर्ष पुराना है।

प्र. २०. महाभारत का काल कितना पुराना है ?

उ. महाभारत का काल लगभग ५२०० वर्ष पुराना है।

प्र. २१. पारसी मत कितना पुराना है ?

उ. पारसी मत लगभग ४,५०० वर्ष पुराना है।

प्र. २२. यहूदी मत कितना पुराना है ?

उ. यहूदी मत लगभग ४००० वर्ष पुराना है।

प्र. २३. जैनबौद्ध मत का काल कितना पुराना है ?

उ. जैनबौद्ध मत का काल लगभग २५०० वर्ष पुराना है।

प्र. २४. शंकराचार्य का काल कितना पुराना है ?

उ. शंकराचार्य का काल लगभग २३०० वर्ष पुराना है।

प्र. २५. हिन्दु-पुराण मत का काल कितना पुराना है ?

उ. हिन्दु-पुराण मत का काल लगभग २२०० वर्ष पुराना है।

प्र. २६. ईसाई मत कितना पुराना है ?

उ. ईसाई मत लगभग २००० वर्ष पुराना है।

प्र. २७. इस्लाम मत कितना पुराना है ?

उ. इस्लाम मत लगभग १४०० वर्ष पुराना है।

प्र. २८. सिक्ख मत कितना पुराना है ?

उ. सिक्ख मत लगभग ५०० वर्ष पुराना है।

प्र. २९. ब्रह्माकुमारी, राधास्वामी, गायत्री परिवार, स्वामी नारायण, आनन्द मार्ग...इत्यादि मत-पंथ-सम्प्रदाय कितने वर्ष पुराने हैं ?

उ. देश में सैंकड़ों की संख्या में प्रचलित वर्तमान सम्प्रदाय १००-१५० वर्ष पूर्व के आसपास के काल के ही हैं।

प्र. ३०. ईश्वर को मूर्ति रूप में बनाकर पूजना कब से आरम्भ हुआ ?

उ. ईश्वर को मूर्ति रूप में बनाकर पूजना लगभग २५०० वर्ष पूर्व से आरम्भ हुआ। इससे पूर्व लोग निराकार ईश्वर की ही उपासना करते थे ।

प्र. ३१. वेदों में धर्म के लक्षण क्या हैं ?

उ. धैर्य रखना, क्षमा करना, मन पर नियन्त्रण, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि बढ़ाना, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करना, सत्य बोलना, क्रोध न करना ।

प्र. ३२. पृथ्वी पर सबसे पूर्व मनुष्य कहाँ उत्पन्न हुए ?

उ. पृथ्वी पर सबसे पूर्व मनुष्य तिब्बत में उत्पन्न हुए।

प्र. ३३. आर्य किसे कहते हैं ?

उ. उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव वाले मनुष्य का नाम आर्य होता है।

प्र. ३४. क्या आर्य लोग भारतवर्ष में बाहर से आये थे ?

उ. आर्य लोग भारतवर्ष में बाहर से नहीं आये थे।

प्र. ३५. इतिहास में ऐसा पढ़ाते हैं कि आर्य बाहर से आये थे ?

उ. इतिहास में गलत पढ़ाया जा रहा है, आर्य लोग भारत के ही मूलनिवासी थे।

प्र. ३६. चक्रवर्ती सम्राट किसे कहते हैं ?

उ. सम्पूर्ण पृथ्वी के राजा को चक्रवर्ती सम्राट कहते हैं।

प्र. ३७. चक्रवर्ती सम्राट कब हुए थे ?

उ. सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत पर्यन्त इस पृथिवी पर चक्रवर्ती राजा ही होते रहे हैं।

प्र. ३८. अन्तिम चक्रवर्ती राजा कौन थे ?

उ. युधिष्ठिर भारतवर्ष के अन्तिम चक्रवर्ती राजा थे।

प्र. ३९. पृथ्वी पर वैदिक साम्राज्य कब तक रहा ?

उ. पृथ्वी पर वैदिक साम्राज्य सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत काल पर्यन्त अर्थात् लगभग १,९६,०८,४८,००० वर्ष तक रहा।

प्र. ४०. वैदिक काल में विश्व के लोग किस ईश्वर को मानते थे ?

उ. वैदिक काल में विश्व के लोग केवल एक निराकार ईश्वर को मानते थे।

प्र. ४१. वैदिक साम्राज्य के काल में विश्व शासन की भाषा कौन सी थी ?

उ. वैदिक साम्राज्य के काल में विश्व शासन की भाषा संस्कृत थी।

प्र. ४२. वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली कौन सी थी ?

उ. वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली गुरुकुलीय थी।

प्र. ४३. वैदिक धर्म में व्यक्तिगत जीवन को कितने भागों में बाँटा गया है ?

उ. वैदिक धर्म में व्यक्तिगत जीवन को चार भागों में बाँटा गया है। जिन्हें चार आश्रम कहते हैं।

प्र. ४४. चार आश्रमों के नाम क्या-क्या है ?

उ. चार आश्रमों के नाम निम्न हैं- ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, संन्यास आश्रम ।

प्र. ४५. वैदिक धर्म में कर्म के आधार पर मानव समाज को कितने भागों में बाँटा गया है और उनके नाम क्या हैं?

उ. वैदिक धर्म में कर्म के आधार पर मानव समाज को चार भागों में बाँटा गया है जिन्हें चार वर्ण कहते हैं। जिनके नाम हैं-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

प्र. ४६. क्या वैदिक धर्म में ईश्वर का अवतार लेना बताया गया है ?

उ. वैदिक धर्म में ईश्वर का अवतार लेना नहीं बताया गया है। क्योंकि सर्वव्यापक, निराकार ईश्वर का अवतार लेना संभव नहीं है।

प्र. ४७. वैदिक धर्मी के लिए कौन से कार्य करने अनिवार्य है ?

उ. वैदिक धर्मी के लिए पंचमहायज्ञ करने अनिवार्य है।

प्र. ४८. पंचमहायज्ञों के नाम कौन-कौन से है ?

उ. पंचमहायज्ञों के नाम ब्रह्मयज्ञ (ईश्वर का ध्यान करना वेद को पढ़ना), देवयज्ञ (हवन करना), पितृयज्ञ(माता-पिता, बड़े व्यक्तियों की सेवा करना), अतिथियज्ञ(विद्वान्, संन्यासी, समाजसेवी व्यक्तियों का सत्कार करना), बलिवैश्वदेवयज्ञ (पशु-पक्षी आदि की सेवा करना)।

प्र. ४९. वैदिक धर्म में जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए और कौन से विधि-विधान बताए गए हैं ?

उ. वैदिक धर्म में जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए १६ संस्कारों का करना अनिवार्य बतलाया गया है।

प्र. ५०. १६ संस्कारों के नाम क्या हैं ?

उ. १६ संस्कारों के नाम निम्न हैं – गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, निष्क्रमणम्, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि।

प्र. ५१. वैदिक धर्मियों का अभिवादन शब्द कौन सा है ?

उ. वैदिक धर्मियों का अभिवादन शब्द 'नमस्ते' है।

प्र. ५२. क्या वैदिक धर्म में त्रुटि, भूल, दोष, पाप के लिए ईश्वर की ओर से क्षमा का विधान है ?

उ. वैदिक धर्म में त्रुटि, भूल, दोष, पाप के लिए ईश्वर की

ओर से क्षमा का विधान नहीं है।

प्र. ५३. शास्त्र कितने हैं और उनके नाम क्या हैं ?

उ. शास्त्र ६ हैं और उनके नाम निम्न हैं-योगदर्शन, सांख्यदर्शन, वैशेषिकदर्शन, न्यायदर्शन, वेदान्तदर्शन और मीमांसादर्शन ।

प्र. ५४. वेदों के अंग कितने हैं और उनके नाम क्या हैं ?

उ. वेदों के अंग ६ हैं और उनके नाम निम्न हैं-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ।

प्र. ५५. वेदों के आधार पर ऋषियों द्वारा बनाया गया सामाजिक विधि-विधान तथा आचार संहिता का प्रसिद्ध, प्राचीन और महत्त्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थ कौन सा है ?

उ. वेदों के आधार पर ऋषियों द्वारा बनाया गया सामाजिक विधि-विधान तथा आचार संहिता का प्रसिद्ध, प्राचीन और महत्त्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थ 'मनुस्मृति' है।

प्र. ५६. क्या वैदिक धर्म में छुआछूत, जातिभेद, जादूटोना, डोराधागा, ताबीज, शकुन, फलित ज्योतिष, जन्मकुण्डली, हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, नदी स्नान, बलिप्रथा, सतीप्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह, भूत-प्रेत, मृतकों के नाम पिण्डदान, भविष्यवाणी आदि का विधान है ?

उ. वैदिक धर्म में छुआछूत, जातिभेद, जादूटोना, डोराधागा, ताबीज, शकुन, फलित ज्योतिष, जन्मकुण्डली, हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, नदी स्नान, बलिप्रथा, सतिप्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह भूत-प्रेत, मृतकों के नाम पिण्डदान, भविष्यवाणी आदि का विधान नहीं है।

प्र. ५७. वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य/उद्देश्य/प्रयोजन क्या बताया गया है ?

प्र. उ. वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य/उद्देश्य/प्रयोजन समस्त दुःखों से छूटना बताया गया है।

प्र. ५८. सभी दुःखों से छूटना कैसे संभव है ?

उ. आध्यात्मिक अज्ञान के नष्ट हो जाने पर सभी दुःखों से

छूटना संभव है।

प्र. ५९. आध्यात्मिक अज्ञान कैसे नष्ट होता है ?

उ. आध्यात्मिक अज्ञान ईश्वर द्वारा आध्यात्मिक शुद्ध ज्ञान देने पर नष्ट होता है।

प्र. ६०. ईश्वर आध्यात्मिक शुद्ध ज्ञान कब देता है ?

उ. ईश्वर आध्यात्मिक शुद्ध ज्ञान मन की समाधि अवस्था में देता है।

प्र. ६१. समाधि की अवस्था कैसे प्राप्त होती है ?

उ. समाधि की अवस्था मन, इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण करने पर प्राप्त होती है।

प्र. ६२. मन, इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण कैसे होता है ?

उ. मन, इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण आत्मा का साक्षात्कार करने पर होता है।

प्र. ६३. आत्मा का साक्षात्कार कब होता है ?

उ. आत्मा का साक्षात्कार आत्मा से सम्बन्धित विज्ञान को पढ़कर, विचारकर, निर्णय लेकर, दृढ़ निश्चय करके तपस्या और पुरूषार्थ पूर्वक कार्यों के करने से होता है।

प्र. ६४. ईश्वर का ध्यान करने से क्या लाभ होता है ?

उ. ईश्वर का ध्यान करने से मन पर अधिकार होता है, इन्द्रियों पर नियन्त्रण होता है, एकाग्रता बढ़ती है, स्मृतिशक्ति तेज होती है, बुद्धि सही और शीघ्र निर्णय लेने वाली बनती है, बुरे संस्कार नष्ट होते हैं, अच्छे संस्कार उभरते हैं, आत्मिक बल बढ़ता है, धैर्य, सहनशक्ति, क्षमा, दया, निष्कामता की वृद्धि होती है और विशेष आनन्द, शान्ति, निर्भीकता की प्राप्ति होती है।

प्र. ६५. मनुष्य दुःखी क्यों होता है ?

उ. मनुष्य राग, द्वेष और मोह अर्थात् अज्ञान के कारण दुःखी होता है।

प्र. ६६. वैराग्य का अर्थ क्या है ?

उ. वैराग्य का अर्थ है राग-द्वेष से रहित, एषणाओं से रहित,

सुख लेने की इच्छा से रहित होकर निष्काम भावना से कर्त्तव्य कर्मों को करना।

प्र. ६७. आध्यात्मिकता शब्द का क्या अर्थ है ?

उ. आध्यात्मिकता शब्द का अर्थ है आत्मा, परमात्मा, मन, बुद्धि, मोक्ष, बन्ध, पुनर्जन्म, कर्म और उनका फल, संस्कार, समाधि इत्यादि विषयों का ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करना और तदानुसार आचरण करना।

प्र. ६८. मनुष्य के मन में अशान्ति, भय, चिन्ता क्यों उत्पन्न होते हैं ?

उ. मनुष्य के मन में अशान्ति, भय, चिन्ता पाप कर्म करने से उत्पन्न होते है।

प्र. ६९. पाप किसे कहते है ?

उ. अधर्माचरण को पाप कहते हैं।

प्र. ७०. अधर्माचरण किसे कहते हैं ?

उ. ईश्वर की आज्ञाओं, शास्त्रों के विधि-विधानों, महापुरुषों के निर्देशों तथा अपनी पवित्र आत्मा में उत्पन्न होने वाले विचारों के विपरीत व्यवहार करने का नाम अधर्माचरण है।

प्र. ७१. धर्म की सामान्य परिभाषा क्या है ?

उ. धर्म की सामान्य परिभाषा यह है कि जो व्यवहार अपने को अच्छा लगे वह दूसरों के प्रति करें और जो व्यवहार अपने को अच्छा न लगे वह दूसरों के प्रति न करें।

प्र. ७२. वैदिक धर्म में कर्मफल सिद्धान्त क्या है ?

उ. जो मनुष्य शरीर, मन, इन्द्रियों से जितने भी अच्छे-बुरे कर्म करता है उन सबका फल सुख-दुःख के रूप में अवश्य ही मिलता है।

प्र. ७३. क्या वेदों के अनुसार बुरे कर्मों के फल माफ हो सकते हैं ?

उ. वेदों के अनुसार बुरे कर्मों के फल किसी प्रकार से भी माफ नहीं हो सकते हैं।

प्र. ७४. तो फिर दान-पुण्य, जप-तप, सेवा-परोपकार आदि का क्या लाभ होता है ?

उ. दान-पुण्य, जप-तप, सेवा-परोपकार आदि का अलग से अच्छा फल मिलता है इससे बुरे कर्मों के फल न कम होते हैं न माफ होते हैं।

प्र. ७५. जब कर्मों का फल मिलना ही है तो ईश्वर की उपासना करने से क्या लाभ है ?

उ. ईश्वर की उपासना करने से बुद्धि पवित्र होती है और आनन्द की प्राप्ति होती है। आत्मिक बल मिलता है मन में उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं परिणामस्वरूप मनुष्य भविष्य में बुरे कर्म नहीं करता है अथवा कम करता है।

प्र. ७६. क्या हमारा भविष्य निश्चित है और इसको कोई जानकर बता सकता है ?

उ. हमारा भविष्य निश्चित नहीं है और इसको कोई भी जानकर बता नहीं सकता है।

प्र. ७७. तो फिर ये ज्योतिषी लोग भविष्य की बातें बताते हैं ये सत्य नहीं है ?

उ. हाँ, ज्योतिषी लोग भविष्य की बातें बताते हैं ये सत्य नहीं है।

प्र. ७८. किसी विशेष परिस्थिति में झूठ बोलना लाभकारी और उचित होता है ?

उ. किसी भी परिस्थिति में झूठ बोलना न लाभकारी है और न उचित होता है।

प्र. ७९. क्या ईश्वर अपनी इच्छा से किसी मनुष्य को बिना कर्म किए सुख-दुःख रूपी फल देता है ?

उ. ईश्वर अपनी इच्छा से किसी मनुष्य को बिना कर्म किए सुख-दुःख रूपी फल नहीं देता है।

प्र. ८०. क्या अज्ञान के कारण किए गए बुरे कर्मों का फल भी मिलता है ?

उ. जी हाँ, अज्ञान के कारण किए गए बुरे कर्मों का फल भी अवश्य मिलता है। हमारा कर्त्तव्य है कि ज्ञान को दूर करें।

प्र. ८१. कौन सा कार्य अच्छा है इसका पता कैसे लग सकता है ?

उ. किसी कार्य के करने से पहले, करते समय, करने के बाद

मन में आनन्द, उत्साह, प्रसन्नता, शान्ति, सन्तोष उत्पन्न होता हो, साथ ही जिससे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्र की किसी प्रकार की हानि न हो, ऐसे कार्य को अच्छा मानना चाहिए।

प्र. ८२. कौन सा कार्य बुरा है इसका पता कैसे लग सकता है?

उ. किसी कार्य के करने से पहले, करते समय, करने के बाद मन में भय, शंका, लज्जा उत्पन्न होती हो, साथ ही जिससे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्र की कोई हानि होती हो, ऐसे कार्य को बुरा मानना चाहिए।

प्र. ८३. मन के ऊपर नियन्त्रण कैसे होता है ?

उ. मन के ऊपर नियन्त्रण आत्मा की शक्ति का प्रयोग करने से होता है।

प्र. ८४. आत्मा की शक्ति कैसे उत्पन्न की जाती है ?

उ. यह विचार करके कि 'मैं एक चेतन तत्त्व हूँ और मन, इन्द्रियाँ और शरीर का स्वामी हूँ, शरीर, मन, इन्द्रियाँ जड़ हैं, मेरी इच्छा और प्रयत्न के बिना शरीर, मन, इन्द्रियाँ अपने आप कोई भी काम नहीं कर सकते हैं। मैं अपनी इच्छा से जिस काम को करना चाहूँगा वह करूँगा, जिस काम को नहीं करना चाहूँगा वह नहीं करूँगा। मैं जिस विचार को उठाना चाहूँगा वह उठाऊँगा और जिस विचार को उठाना नहीं चाहूँगा वह नहीं उठाऊँगा।' ऐसा दृढ़ निश्चय करके मन, वाणी ओर शरीर से सावधानी और सतर्कता पूर्वक व्यवहार करने से आत्मिक शक्ति बढ़ती रहती है।

प्र. ८५. कार्यों मे सफलता के क्या उपाय हैं ?

उ. कार्यों मे सफलता के निम्न उपाय हैं-१. कार्य को करने की मन में तीव्र इच्छा २. कार्य को पूरा करने के लिए पर्याप्त साधनों का संग्रह ३. कार्य को सरलता से, शीघ्रता से और सुन्दर रूप में करने की यथार्थ विधि को जानना ४. कार्य के पूरा होने तक पूर्ण पुरूषार्थ करते रहना ५. कार्य करते हुए मार्ग में आने वाले बाधा, कष्ट, अभाव, विरोध, प्रतिकूलताओं आदि को प्रसन्नता पूर्वक सहन करना, हताश-निराश, खिन्न न होना ६. ईश्वर से कार्य की सफलता के लिए ज्ञान, बल, साहस, उत्साह, पराक्रम आदि की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करना।

प्र. ८६. किसी पुस्तक के ईश्वरीय होने में क्या प्रमाण है ?

उ. किसी पुस्तक के ईश्वरीय होने में निम्न प्रमाण हैं-१. जो सृष्टि के आदि में बनी हो २. जिसमें विज्ञान विरूद्ध बातें न हों ३. जिसमें मनुष्यों का इतिहास न हो ४. जिसमें परस्पर विरोध न हो ५. जिसमें अन्धविश्वास, पाखण्ड, अज्ञानयुक्त, अप्रमाणिक बातों का वर्णन न हों ६. जिसमें मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट उन्नति हेतु सब प्रकार के विषयों का वर्णन किया गया हो ७. जिसमें सृष्टि के प्रत्यक्ष नियमों के विरूद्ध सिद्धान्तों का वर्णन न हो ८. जिस प्रकार के गुण-कर्म-स्वभाव वाला ईश्वर है अथवा उसको होना चाहिए वैसे ही गुणों का वर्णन पुस्तक में किया हो ९. जिसमें पक्षपात रहित समान रूप से सब मनुष्यों के लिए विधि-विधान, नियम-अनुशासन का विधान किया गया हो १०. जो किसी देश विशेष के मनुष्यों, जाति, मत, पंथ, सम्प्रदाय के लिए न होकर सार्वजनिक, सार्वभौमिक, सार्वकालिक हो ११. जो किसी मनुष्यकृत भाषा में न हो।

प्र. ८७. मनुष्य जीवन की असफलता का लक्षण क्या है ?

उ. जिस मनुष्य के जीवन में सुख, शान्ति, सन्तोष, तृप्ति, निर्भीकता, स्वतन्त्रता नहीं होती है वह जीवन असफल होता है। चाहे उसके पास में कितना ही धन, सम्पत्ति, रूप, बल, विद्या, प्रतिष्ठा, सम्मान, यश, कीर्ति क्यों न हो।

प्र. ८८. मनुष्य जीवन की सफलता का लक्षण क्या है ?

उ. जिस मनुष्य के जीवन में सुख, शान्ति, सन्तोष, तृप्ति, निर्भीकता, स्वतन्त्रता होती है वह जीवन सफल होता है। चाहे उसके

पास में धन, सम्पत्ति, रूप, बल, विद्या, प्रतिष्ठा, सम्मान, यश, कीर्ति थोड़ी क्यों न हो या न भी क्यों न हो उसका जीवन सफल होता है।

प्र. ८९. यज्ञ शब्द का अर्थ क्या है ?

उ. यज्ञ शब्द का अर्थ है दान, त्याग, श्रेष्ठ कार्यों को पूर्ण पुरूषार्थ के साथ निष्काम भावना से करना। अग्निहोत्र भी यज्ञ सबसे ग्रहण होता है।

प्र. ९०. किस प्रकार का जीवन चलाने से मनुष्य को अधिकतम सुख की प्राप्ति हो सकती है ?

उ. निम्न प्रकार का जीवन चलाने से मनुष्य को अधिकतम सुख की प्राप्ति हो सकती है-आदर्श दिनचर्या, शीघ्र जागरण, भ्रमण, व्यायाम, स्नान, यज्ञ, ईश्वर का ध्यान, उत्तम पुस्तकों का स्वाध्याय, सत्य का पालन, राग-द्वेष रहित व्यवहार, दूसरों के धन और अधिकारों को ग्रहण न करने की इच्छा, परोपकार, समाज-राष्ट्र की उन्नति हेतु संगठन, त्याग, सेवा, बलिदान की भावना, मन में उत्तम कार्यों को करने और बुरे कार्यों को न करने का दृढ़ संकल्प, सात्विक भोजन, मधुर व्यवहार, आत्मनिरीक्षण, महापुरूषों, विद्वानों का सत्संग, संयम, त्याग, तपस्या आदि गुण-कर्म-स्वभाव को धारण करने से जीवन में अधिकतम सुख की प्राप्ति हो सकती है।

प्र. ९१. राष्ट्र / विश्व की उन्नति के क्या वैदिक उपाय हैं ?

उ. राष्ट्र / विश्व की उन्नति के वैदिक उपाय निम्न हैं-सम्पूर्ण विश्व के लोग जब एक ईश्वर को मानेंगे उनकी भाषा एक होगी धर्म एक होगा संविधान एक होगा शिक्षा एक होगी आचार-विचार एक होंगे न्याय और राजनीति एक प्रकार की होगी हानि और लाभ एक समान होगा तभी सम्पूर्ण राष्ट्र और विश्व की उन्नति हो सकती है।

प्र. ९२. सम्पूर्ण राष्ट्र और विश्व में एकता कैसे स्थापित हो सकती है ?

उ. सम्पूर्ण राष्ट्र और विश्व में एकता तभी स्थापित हो सकती है

१. सभी मनुष्यों का लक्ष्य एक हो २. उस लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग एक हो ३. उस लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन एक हों तथा ४. उस मार्ग पर चलने की विधि/सिद्धान्त एक हों ।

प्र. ९३. जीवन को शीघ्रता से और सरलता से बिना भौतिक साधनों के उन्नत करने का क्या आध्यात्मिक उपाय है ?

उ. जीवन को शीघ्रता से और सरलता से बिना भौतिक साधनों के उन्नत करने का आध्यात्मिक उपाय है **आत्मनिरीक्षण।** रात्रि के समय में सोने से पूर्व अथवा कभी भी मनुष्य को चाहिए कि शान्त, एकान्त स्थान में बैठकर एकाग्रता से अपने जीवन के क्रिया व्यवहारों का सूक्ष्मता से परीक्षण करे और यह जानने का प्रयास करे कि मेरे जीवन में क्या बुराईयाँ हैं, कौन से दोष हैं, कितनी त्रुटियाँ हैं, मैं कौन सी भूले करता हूँ तथा किन कार्यों को करना था, जो नहीं किया, किन कार्यों को कर लिया जो नहीं करना था किन कार्यों में कम समय लगाना था जिनमें अधिक समय लगा दिया। किन कार्यों में अधिक समय लगाना था जिनमें कम समय लगाया। कौन से कार्य मुख्य थे जिनको गौण माना, कौन से कार्य गौण थे जिनको मुख्य माना इत्यादि कमियों को जानकर और उन्हें जीवन की उन्नति में बाधक मानकर उनको पूर्ण रूप से दूर करने की प्रतिज्ञा करे और मन में दृढ़ संकल्प करे कि मैं इन दोषों को भविष्य में पुनः नहीं होने दूँगा । साथ ही दिनभर व्यवहार करते समय मन, वाणी और शरीर से सतर्क और सावधान रहे। ईश्वर से भी प्रतिदिन जीवन को उन्नत बनाने में आत्मिक बल, ज्ञान-विज्ञान, धैर्य, सहिष्णुता आदि गुणों की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करता रहे इन उपायों के करने से सामान्य मनुष्य का जीवन भी सरलता शीघ्रता से श्रेष्ठ बन सकता है।

प्र. ६४. क्या मनुष्यों का पुनर्जन्म होता है इसमें क्या प्रमाण है?
उ. मनुष्यों का पुनर्जन्म होता है इसमें निम्न प्रमाण है - जन्मते ही मनुष्य-पशु आदि के बच्चों का स्तनपान करना। १. चार-छः मास का शिशु माँ की गोद में आँखें बंद किए हुए अथवा सोते हुए का कभी प्रसन्न होना, कभी भयभीत होना। २. संसार में ऊँची-नीची योनियाँ ३. बाल्यावस्था में बौद्धिकस्तर का भेद देखकर यह अनुमान होता है कि जीवात्मा का पुनः जन्म होता है।

प्र. ६५. समाज में लोगों के साथ व्यवहार कैसे करना चाहिए ?
उ. समाज में चार प्रकार के व्यक्ति होते हैं - उनके साथ चार प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। १. जो व्यक्ति धनादि के द्वारा सुखी और समृद्ध हैं उनके साथ मित्रता रखनी चाहिए। २. जो व्यक्ति धनादि से रहित, निर्धन, दुखी हैं उनके ऊपर दया करके उनकी यथाशक्ति सहयोग करना चाहिए। ३. जो व्यक्ति त्यागी, तपस्वी, सेवाभावी हैं उनको देखकरके मन में प्रसन्न होना चाहिए और उनका आदर-सत्कार करना चाहिए। ४. जो व्यक्ति दुष्ट हैं उनके साथ उपेक्षा करनी चाहिए। अर्थात् न उनसे बैर रखे न प्रेम करे।

प्र. ६६. मरने के बाद कितने काल में मनुष्य नया जन्म लेता है ?
उ. तत्काल-थोड़े से काल में ही नया जन्म ले लेता है।

प्र. ९७. मरने के बाद मनुष्य को कौन सा जन्म मिलता है ?
उ. मरने के बाद आधे से अधिक अच्छे कर्म हो तो मनुष्य जन्म मिलता है और आधे से अधिक बुरे कर्म हो तो पशु-पक्षी कीट पतंग आदि का जन्म मिलता है।

प्र. ६८. क्या मनुष्य की आयु निश्चित है ?
उ. मनुष्य की आयु निश्चित नहीं है। आयु को घटाया-बढ़ाया जा सकता है।

प्र. ६६. आयु को बढ़ाने के क्या उपाय हैं ?
उ. आयु को बढ़ाने के निम्न उपाय हैं-सात्त्विक भोजन, नियमित दिनचर्या, ब्रह्मचर्य का पालन, पूर्ण निद्रा, व्यायाम, अच्छी पुस्तकों

को पढ़ना, सत्संग, विद्वान और श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ मित्रता, ईश्वर पर श्रद्धा और विश्वास, सतर्कता, सावधानी, शान्ति, प्रसन्नता, धैर्य, दया, क्षमा आदि का प्रयोग। इन उपायों से मनुष्य अपनी आयु को बढ़ा सकता है।

प्र.१००. मनुष्य अल्पआयु में/जल्दी/अकाल क्यों मर जाता है ?
उ. तामसिक भोजन, अनियमित दिनचर्या, असंयम, व्यभिचार, अधिक जागना, स्वाध्याय-सत्संग न करना, बुरे व्यक्तियों के साथ मित्रता, नास्तिकता, असावधानी, क्रूरता, अशान्ति, चिन्ता, शोक, भय, रोग आदि से मनुष्य की शारीरिक मानसिक शक्तियाँ कम हो जाती है और वह अल्पआयु में-अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

प्र.१०१. मनुष्य का सामाजिक-राष्ट्रीय कर्त्तव्य क्या है ?
उ. मनुष्य को अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक उन्नति के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के लोगों में विद्यमान अज्ञान, अन्याय और अभाव को दूर करने का तन-मन-धन से पूर्ण प्रयास करते रहना चाहिए क्योंकि समाज-राष्ट्र के सभी व्यक्तियों के उन्नत हुए बिना कोई भी व्यक्ति या परिवार पूर्ण रूपेण सुख, शान्ति, सुरक्षा निश्चिन्तता, निर्भीकता आदि को प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए समाज, राष्ट्र की उन्नति के लिए भी संगठित होकर के, संस्था बनाकर सार्वजनिक कल्याण के कार्यों को भी त्याग, तपस्या के साथ करना चाहिए।

★ ★ ★